# भगवान नरसिंह और भक्त प्रह्लाद की कथा

बहुत समय पहले की बात बताऊं,  
एक क्रूर असुर हिरण्यकश्यप की कथा सुनाऊं।  
था वह राजा बड़ा अभिमानी,  
तप किया घोर, जैसे बड़ा ज्ञानी।

शब्दों का यूं जाल बिछाया,  
अमरत्व जैसा वरदान पाया।  
बोला वह ब्रह्माजी से:  
"वर दो मुझे अनोखा सभी से।

ना मरूं दिन में, ना रात में,  
ना घर के भीतर, ना बाहर।  
ना ही धरती पर, ना आकाश में,  
ना मनुष्य से, ना पशु से।

ना अस्त्र से, ना शस्त्र से,  
मुझे मृत्यु से कोई न शिकस्त दे।"

वरदान से वह अभिमान में आया,  
विष्णुजी को शत्रु मन में ठहराया।  
पर विधाता ने खेल यूं रचाया,  
प्रभु का ही परम भक्त प्रह्लाद घर में आया।

दिन-रात हरि का नाम वह जपे,  
सुन यह प्रवचन असुर का खून खौले।  
क्रोध से ग्रसित, बोला राजा घमंडी:  
"छोड़ दे पुत्र नाम हरि का,  
क्यों अड़ा है जिद पर, ओ हठी।

जो तू न मानेगा कहना,  
मृत्युदंड दूंगा, समझ लेना।"  
पर भक्त का भगवान पर था विश्वास पक्का,  
हरि नाम न छोड़ा, चाहे दिया पर्वत से धक्का।

साँप से डसवाया, आग में जलवाया,  
समुद्र में भी उसे फिंकवाया।  
पर धन्य है प्रह्लाद की भक्ति,  
एक बाल भी बाँका कर ना पाया।

\*\*संध्या समय की बेला आई,  
दुष्ट की मृत्यु समीप लाई।  
बोला अकड़ के: "कहाँ है तेरा हरि,  
दिखाओ मुझे, जो तू कहता सही।

क्या वह है इस खंभे के भीतर?  
या तेरी कल्पना का मात्र चित्र?"\*\*

प्रह्लाद मुस्काए, बोले विनम्र:  
"कण-कण में हरि, क्षण-क्षण में हरि।  
धरती पर हरि, अम्बर में हरि,  
मुझमें है हरि, तुझमें है हरि।  
जहां भी देखो, सर्वत्र है हरि।"

**फिर क्या हुआ?**

राजा ने तोड़ा वह भारी स्तंभ,  
गूँज उठा जैसे कोई मृदंग।  
नरसिंह अवतार में आए प्रभु,  
भारी गर्जन से गूँजी पृथ्वी।

ना पूरा मानव, ना पूरा पशु,  
ना समय दिन का, ना रात का।  
उठाया अपनी जाँघ पर,  
चीर दिया नखों से, घर की चौखट पर।

**अंततः विजय हुई धर्म की अधर्म पर।**

**शिक्षा**

बुराई का नाश हमेशा अच्छाई से होता है,  
और विपरीत परिस्थिति में भी हमें  
स्वयं पर और ईश्वर पर विश्वास रखना चाहिए।